दुःख दिये दुःख होत ळे

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़

पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

सुख और दुःख आत्मकृत है। सुख और दुःख किसी अदृश्य सत्ता के द्वारा नहीं दिया जाता। यदि हम किसी भी प्राणी को सुख देते हैं तो हमें भी सुख मिलता है। यदि हम किसी भी प्राणी को दुःख देते हैं तो हमें भी दुःख मिलता है। सुख और दुःख का कारण कोई अन्य नहीं बल्कि आत्मकृत कर्म है। प्रत्येक वस्तु का कोई न कोई कारण अवश्य होता है। यह सनातन सत्य है। बिमारी का पहले कारण तैयार होता है तब बिमारी आती है। यदि हमने गलत कार्य किया है तो परिणाम भी हमें ही भुगतना पड़ेगा। एक हाथ से ताली नहीं बजती। ताली बजाने के लिए दोनों हाथों की आवश्यकता होती है। जो व्यक्ति दूसरों के लिए कुंआ खोदता है उस कुंए में दूसरा व्यक्ति गिरे या ना गिरे खोदने वाला पहले उसमें गिरता है। इसलिए किसी प्राणी को दुःख नहीं देना चाहिए।

जो जैसा बीज बोता है उसे वैसा फल भोगना पड़ता है। यदि आम का बीज बोया गया है तो आम का फल प्राप्त होगा और यदि बबूल का वृक्ष बोया गया है तो बबूल के कांटे ही प्राप्त होंगे। कभी किसी दूसरे व्यक्ति का दिल नहीं दुखाना चाहिए। सदैव अच्छे कार्य करने का प्रयास करना चाहिए। शत्रु को भी मित्र बनाने की कला सिखनी चाहिए। यदि सभी के साथ मित्रवत् व्यवहार किया जाता है तो शत्रु भी मित्र बन जाते हैं।

सुख और दुःख का अन्तर्दर्शन क्या है ? इस विषय पर चिन्तन किया जा रहा है। जो अनुकूल है वह सुख है और जो प्रतिकूल है वह दुःख है। सुख और दुःख मनुष्यकृत है। प्रायः लोग यह कहते हैं कि सुख और दुःख किसी दूसरे के द्वारा दिया जाता है किन्तु यदि गम्भीरता पूर्वक विचार किया जाये तो यह प्रतीत होता हैं कि सुख दुःख मनुष्य का अपना बोया हुआ है। दार्शनिक दृष्टि से देखा जाये तो आत्मरमण करना ही सुख है। इसके अतिरिक्त जितनी भी सांसारिक वस्तुएं हैं, वे सब दुःख स्वरूप है।

मानव जब परायी वस्तु को अपना मान लेता है तो उसे दुःख का मिलना स्वाभाविक है। वैभाविक जितनी भी प्रवृत्तियां है उनसे दुःख ही उत्पन्न होता है, किन्तु मानव उन्हें ही सुख स्वरूप मानता है। जैसे कुत्ता सुखी हुयी हड्डी को खाता हैं और स्वयं के मुख से निकले हुये रक्त को चाटकर सुख की अनुभूति करता है वैसे ही यह सांसारिक सुख भी है। मानव माया स्वरूप इस संसार को सत्य मानकर के व्यवहार करता है। यह मेरा है, यह तेरा है इसी में पूरे जीवन को बिता देता है। जो वास्तविक सुख है उधर उसका ध्यान ही नहीं जाता। इसीका परिणाम है कि वह दुःख को सुख मान बैठता है और प्रसन्नता का अनुभव करता है।

गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा हैं कि सूत्र में मोतियों की भांति यह सम्पूर्ण संसार मुझमें ही समाया हुआ है। जो मानव इस बात को स्वीकार कर आनन्द की अनुभूति करता है वह तो सुख प्राप्त करता है, किन्तु जो अहंकारवश ईश्वर या परमात्मा को अन्यत्र खोजता है उसे कही भी परमात्मा की प्राप्ति नहीं हो सकती। जैसे पानी और हिम एक ही है केवल रूपान्तरण दिखाई देता है वैसे ही आत्मा और परमात्मा एक ही है, केवल दृष्टि का अन्तर है। माया के कारण यह संसार भिन्न रूप में प्रतीत होता है। इसकी वास्तविकता यह है कि यह वास्तव में है ही नहीं। जिस प्रकार से रज्जु में सर्प की प्रतीति होती है किन्तु जब प्रकाश की सहायता से रस्सी का ज्ञान होता है तो वहां सर्प नहीं रहता केवल रज्जु ही रहती है। वैसे ही यह संसार है।

यथार्थ का ज्ञान होने पर सत्य की प्रतीति हो जाती है। दर्शन का सत्य यही है। प्रायः सभी दर्शनों में सुख और दुःख की मीमांसा की गई है और सभी दर्शनों ने इसके स्वरूप को जानने का प्रयास किया है। सभी दर्शनों का सत्य प्रायः समान ही है। रास्ते अलग–अलग है। जिस प्रकार से नदियां अनेक मार्गों से होती हुई अन्त में समुद्र में मिल जाती हैं, उसी प्रकार से चिन्तन की धाराएं सभी दर्शनों की अलग–अलग हैं किन्तु अन्तिम सत्य सबका एक ही है। मोक्ष जो जीवन की अन्तिम अवस्था हैं वही पूर्ण सत्य है। इसको प्राप्त करने के लिए सभी दर्शनों ने अपने–अपने मार्ग बतलाये हैं।

भौतिकवादी दर्शन देहात्मवाद में विश्वास करता है अर्थात् देह को ही आत्मा मानकर के जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करना चाहता है, किन्तु यह सुख भौतिक सुख है। प्रिय का मिलन और

अप्रिय का संयोग सुख दुःख हो सकता है। इस संसार में सभी सुख की इच्छा करते हैं दुःख कोई नहीं चाहता। लेकिन दुःख अपने आप मनुष्य के पास आ जाता है। इसका कारण यह है कि जो मनुष्य जैसा कर्म करता है उसे उसका फल सुख और दुःख के रूप में प्राप्त होता है। यदि मानव अच्छा कर्म करता है तो उसे सुख की प्राप्ति होती है और यदि बुरा कर्म करता है तो उसे दुःख की प्राप्ति होती है। इसलिए सुख दुःख को मनुष्यकृत कहा गया है। बंधन का अर्थ है– परतंत्रता और मुक्ति का अर्थ है स्वतंत्रता। परतंत्रता दुःख स्वरूप है और स्वतंत्रता सुख स्वरूप। मनुष्य गति से ही जीव का मोक्ष होना संभव है। यही सुख दुःख का अन्तर्दर्शन है।